epaper
हिन्दुस्तान

कोरोना-कोरंटाइन से डरकर 14 ने दे दी जान

झारखंड में कोरोना से मात्र तीन मरीजों की मौत हुई है, लेकिन इसके साइड इफेक्ट के कारण लॉकडाउन के दौरान सूबे में 14 लोगों की जान जा चुकी है। इन सभी 14 लोगों ने खुदकुशी कर अपनी जान दी है। इनमें कोरोना के भय या उसको लेकर मिली सामाजिक प्रताड़ना के कारण तीन लोगों ने अपनी जान दे दी। दूसरी तरफ लॉकडाउन के कारण काम बंद होने से हुए आर्थिक संकट के कारण छह लोगों ने आत्महत्या का रास्ता चुन लिया। कोरंटाइन का तनाव और अकेलेपन के कारण भी पांच लोगों ने अपनी इहलीला समाप्त कर ली।

03 लोगों कोरोना के भय से आत्महत्या की है, ये काफी सहमे रहते थे

14 दिन का समय अवसाद में आने के लिए लोगों को लगता है

खास बातें

- किसी में अवसाद के लक्षण दिखें तो मनोचिकित्सक की सलाह जरूर लें।
- जो पहले से किसी मानसिक बीमारी के शिकार थे, उनके लिए स्थिति और भी खराब हुई

कोरोना के भय से आत्महत्या

केस 1 रांची जिले के अरगोड़ा थाना क्षेत्र के अशोकनगर में किराए के मकान में रहने वाले ऑटो चालक पप्पू कुमार ने तीन अप्रैल को फांसी लगा कर खुदकुशी कर ली। लॉकडाउन में सबकुछ बंद हो जाने के कारण वह ऑटो नहीं चला पा रहा था। कोरोना के डर से भी वह काफी परेशान रहता था। आखिरकार उसने फांसी लगा जान दे दी।

केस 2 गिरिडीह जिले के बिरनी के बैदापहरी गांव में 28 वर्षीय शिक्षक सुरेश पंडित ने खुद के कोरोना पॉजिटिव होने के शक में 19 अप्रैल को आत्महत्या कर ली थी। उसने सुसाइड नोट में लिखा था कि कोरोना के फैलाव से आहत है और उसे लगता है कि वह कोरोना का मरीज है। इसको लेकर वह काफी परेशान रहता था।

केस 3 जमशेदपुर के सोनुवा के पोड़ाहाट गांव में 21 वर्षीय प्रधुम्म महतो ने 9 मई को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उसके पिता बर्मा महतो को मध्य प्रदेश से वापस लौटते समय रांची में कोरंटाइन कर दिया गया था। गांव के किसी व्यक्ति ने उसके पिता को कोरोना पॉजिटिव कह दिया था। इस वजह से उसने आत्महत्या कर ली।

कोरंटाइन- अकेलेपन के तनाव से 5 मरे

केस 1 गढ़वा जिले के गोदरमाना के हाटदोहर गांव में एक मां ने अपने इकलौते बेटे को कोरोना से बचाने के लिए घर बुलाया। उसके लौटने पर मां ने उसे 14 दिन एहतियातन कोरंटाइन सेंटर में रहने के लिए कहा। यह बेटे को नागवार लगा और उसने 11 मई को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

केस 2 रांची के बरियातू थाना के मोरहाबादी स्थित अपार्टमेंट में रहने वाली छात्रा प्रीति कुमारी ने आठ मई को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। छात्रा लॉकडाउन के कारण अपने फ्लैट में अकेले थी। वह मेदिनीनगर स्थित अपने घर जाना चाह रही थी। अकेलेपन से तंग आकर उसने आत्महत्या कर ली।

केस 3 दुमका के मसलिया में आदिवासी टोला की महिला पकलु सोरेन (35) ने 3 मई को होम कोरंटाइन में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। वह कुछ दिन पहले पश्चिम बंगाल से मजदूरी कर लौटी थी।

केस 4 पलामू के लेस्लीगंज के कोरंटाइन सेंटर में अयूब आलम नामक युवक ने 22 अप्रैल को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। गोपालगंज निवासी यह युवक कोरंटाइन सेंटर में रखे जाने से तनाव में था।

केस 5 रांची जिले के पंडरा थाना क्षेत्र स्थित ओझा मार्केट में रहने वाली युवती निशा कुमारी ने 30 अप्रैल को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवती की शादी होनी थी, लेकिन लड़का द्वारा इनकार किए जाने के बाद से वह तनाव में थी। लॉकडाउन होने की वजह से घर में रहने से वह और भी ज्यादा डिप्रेशन में चली गई थी।

आर्थिक तंगी के कारण 6 मरे

केस 1 गुमला जिले के भरनो प्रखंड के दुंबो कंसीटोली गांव के 24 वर्षीय किसान प्रदीप उरांव ने लॉकडाउन में आर्थिक तंगी से परेशान हो कर 10 मई की रात फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उसने बैंक से कर्ज लिया था ।

केस 2 धनबाद के महुदा पत्थर गड़िया पंचायत के कंचनपुर में टेंपो ड्राइवर लक्ष्मण रवानी (40) ने 11 मई को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि लॉकडाउन के कारण उसका काम बंद हो गया था। आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी।

केस 3 धनबाद के सरायढेला थाना क्षेत्र ढांगी बस्ती के दो दोस्त अंगद मुर्मू और शनि मुर्मू ने लॉकडाउन में धंधा मंदा होने पर 4 मई को जहर खा लिया। जहर खाने के बाद अंगद ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली ।

केस 4 रांची के बांधगाड़ी में रहने वाले राजेश नायक नामक युवक ने एक मई को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह जॉब नहीं लगने कारण परेशान था। लॉकडाउन के कारण जॉब मिलने में परेशानी से चिंतित था।

केस 5 जमशेदपुर के नोवामुंडी में लॉकडाउन के कारण आर्थिक तनाव में प बंगाल के 34 वर्षीय टेंट कर्मचारी आलोक मंडल ने 9 मई को आत्महत्या कर ली। वह बंगाल से काम के लिए आया था ।

केस 6 जमशेदपुर के ही गुवा में बेरोजगारी से तंग आपसी कलह में पति-पत्नी में हुए झगड़े के बाद पति ने 5 मई को आत्महत्या कर ली। दोनों लॉकडाउन के कारण कई दिनों से आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे।

दिनचर्या बदलने से अवसाद ग्रस्त हो रहे लोग : डॉ सिद्धार्थ

रांची | प्रमुख संवाददाता

लॉकडाउन के दौरान राज्य में हुई आत्महत्या की घटनाओं को लेकर मनोचिकित्सक भी अध्ययन करने में जुटे हैं। मनोचिकित्सक डॉक्टर सिद्धार्थ सिन्हा का कहना है कि लॉकडाउन एक कठिन परिस्थिति है, जिसमें सब लोग जी रहे हैं। हमारी दैनिक दिनचर्या खो गई है। किसी पर आर्थिक दबाव है, तो किसी को नौकरी जाने का डर दिमाग में घर कर गया है।

डॉ सिद्धार्थ का कहना है कि जिन लोगों को शराब, सिगरेट, तंबाकू या अन्य ऐसी चीजों की लत थी, वह उन्हें अचानक से मिलनी बंद हो गई। इसका भी कहीं न कहीं उन पर जबरदस्त मानसिक दबाव पड़ा है। जो पहले से किसी मानसिक बीमारी के शिकार थे, उनके लिए स्थिति और भी खराब हुई। अवसाद में आने के लिए 14 दिन का समय लगता है, लॉकडाउन की अवधि काफी लंबी हो गई है। लोग संक्रमित होने के डर से आत्महत्या का विचार मन में ला रहे हैं।

मनोचिकित्सक ने बताया कि लोगों का एक्यूट स्ट्रेस रिएक्शन (गहन तनाव) अवसाद में तब्दील होता जा रहा है। यह स्थिति अच्छी नहीं। परेशान लोगों को समझाना होगा कि लॉकडाउन महामारी से बचने के लिए सुरक्षा के दृष्टिकोण से लागू किया गया। यह एक दौर है, जो समाप्त हो जाएगा।

किसी में अवसाद के लक्षण दिखें या नकारात्मक विचार निरंतर आ रहे हों, तो टेली काउंसिलिंग के माध्यम से मनोचिकित्सक की सलाह जरूर लें। यह समझना होगा कि मानसिक समस्या कोई कलंक नहीं है।

डॉ सिद्धार्थ सिन्हा (मनोचिकित्सक)।

खास बातें

- किसी पर आर्थिक दबाव है, तो किसी को नौकरी जाने का डर
- गहन तनाव अवसाद में तब्दील होता जा रहा है